कुंडली में कपटी योग

डॉ. सुशील अग्रवाल

विषय प्रवेश

कपटी वह व्यक्ति होता है, जो जानबूझ कर किसी अन्य व्यक्ति को धोखा देने या छल करने की प्रवृति रखता है। हस्त रेखा विशेषज्ञ तो यात्रा के दौरान सहयात्री के हाथ पर सरसरी नजर दौड़कर यह पता लगा लेते हैं कि उनका सहयात्री किस प्रवृति का है– जैसे उसके हाथ के आकार या उसकी जंजीरनुमा हृदय रेखा देखकर समझ जाते हैं कि उनका सहयात्री कपटी प्रवृति का है।

इसी प्रकार हम जन्म कुण्डली के आकलन से भी ज्ञात कर सकते हैं कि जातक में कपट की प्रवृति है या नहीं।प्रश्न कुण्डली के आधार पर भी यह ज्ञात हो जाता है कि प्रश्नकर्ता किस प्रवृति से प्रश्न पूछने आया है। आधुनिक घोर व्यवसायिक युग के वातावरण में कुछ लोग व्यापार में कपटी आचरण को लाभदायक मान सकते हैं, परन्तु कुण्डली में कपटी प्रवृति होने पर वह जातक का व्यवहार बन जाता है, जिसका प्रभाव उस योग से संबंधित दशा में अधिक प्रखरता से सामने आती है।

साहित्यक सन्दर्भ

बृहत् पाराशर होरा शास्त्र में वर्णित है–

शुक्रेऽष्टमगते जाता प्रमत्ता धनवर्जिता ।
निर्दया धर्महीना च मलिना कपटान्विता ।। 31 ।।

अर्थात शुक्र अष्टम भाव में हो, तो स्त्री–जातक प्रमादयुक्त (सावधानी से कार्य न करने वाली), निर्धन, निर्दयी, अधार्मिक,मलिन और कपटी होती है।

फलदीपिका के अनुसार

नीलद्युतिर्दीर्घतनुः कुवर्णः पामी सपाषण डमतः सहिक्कः ।

असत्यवादी कपटी च राहुः कुष्ठी परान्निन्दतिबुद्धिहीनः ।।

राहु के कारकत्व हैं– नीलारंग, विशालशरीर, अशुभवर्ग (बहिष्कृतलोग), एक्जिमा (त्वचाकीबीमारी), गैररूढ़िवादीप्रकृति, हकलाना, झूठा, कपटी, कुष्ठरोग, परनिंदा करने वाला और मूर्ख।

अत : राहु का कपट के योग या संबंधित भाव–भावेश पर पड़े, तो कपटी प्रवृति में वृद्धि होती है। राहु की लग्न, चतुर्थ या पंचम आदि में स्थिति मात्र से कोई जातक कपटी प्रवृति का नहीं होता। राहु किन्हीं स्थितियों में योगकारक फल भी देता है।इसीलिए राहु का सावधानी पूर्वक आकलन किया जाना चाहिए।

फलदीपिका के अनुसार–

सौम्यर्क्षांशे सौम्य युक्ते पञ्चमे वा तदीश्वरे।

वैशेषिकांशेसद्भावेधीमान्निष्कपटीभवेत्।।

अर्थात पंचम–पंचमेश पर शुभ प्रभाव हों तो जातक निष्कपट प्रवृति का होता है।इसका यह अर्थ भी हुआ कि यदि पंचम–पंचमेश पर अत्यधिक अशुभ प्रभाव एवं निर्बलता जातक में कपटी प्रवृति का उद्भव करने में सक्षम हो सकते हैं।

जातक पारिजात के ग्रहयोग फलाध्याय के अनुसार

पापात्मा क्रयविक्रयेषु कुशलरू शुक्रे सशीतद्युतौ।

अर्थात चन्द्र–शुक्र की युति जातक को पापी विचार वाला और क्रय–विक्रय में कुशल बनती है। वैसे– चन्द्र–शुक्र की युति से स्वतः स्पष्ट ही है कि पक्ष निर्बली है, अतः नैसर्गिक पाप ग्रह माना जाएगा। परन्तु जातक को पापी विचार युक्त होने की पुष्टि के इस युति का अशुभ भाव में होना, शुक्र का भी नीचगत वा अस्त होना या युति पर अतिरिक्त अशुभ प्रभाव होना आवश्यक है।

जातक तत्त्वम के प्रथमविवेकरू अध्याय के अनुसार

ज्ञारयोगे कपटी।

अर्थात बुध–मंगल की युति हो तो, जातक कपटी होता है।वैसे– मंगल–बुध की युति को अधिकतर शास्त्रों में निन्दनीय ही माना गया है।जातक पारिजात में जातक को वाचाल, परन्तु औषधि तथा शिल्पकला में चतुर कहा गया है। फलदीपिका में बुध–मंगल की युति से जातक औषधि, व्यापारी वा बाहुबली होता है। सारावली के अनुसार बुध–मंगल

की युति वाला जातक दुष्ट स्त्रियों से युक्त तथा उनका पालन करने वाला और वैद्य होता है।

पापान्विते ज्ञे बलाढ्येड़के कपटी।

अर्थात पाप ग्रहों से युत बुध बली होकर नवम भाव में है, तो जातक कपटी होता है।

सोत्थे कुजे शुभदृग्हीने कपटी।

अर्थात तृतीय भाव में मंगल स्थित हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, तो जातक कपटी होता है।

सुखेशे वा भाग्येशे षष्ठे कपटी।

अर्थात चतुर्थेश या नवमेश षष्ठ भाव में स्थित हो,तो जातक कपटी होता है।

मेषे ज्ञे कपटी।

अर्थात बुध यदि मेष राशि में स्थित हो, तो जातक कपटी होता है।

पापयुते वा पापदृष्टे सुखे कपटी।

अर्थात चतुर्थ भाव यदि पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो, तो जातक कपटी होता है।

पापान्तरे तुर्ये कपटी।

अर्थात चतुर्थ भाव यदि पाप ग्रहों के मध्य (पाप–कर्तरी), तो जातक कपटी होता है।

कर्मपे वा रन्ध्रपे सुखे कपटी।

अर्थात दशमेश या अष्टमेश यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो,तो जातक कपटी होता है।

शन्यारतमोऽन्यतमे पाताले ह्रत्कपटी।

राहुमन्दारयोगे ह्रत्कपटी।

अर्थात चतुर्थ भाव में शनि, मंगल एवं राहु स्थित हों, तो जातक कपटी होता है। राहु, शनि एवं मंगल की युति (किसी भी भाव) से जातक कपटी होता है।

जन्म कुण्डली में लग्नेश का संबंध यदि केवल नैसर्गिक पाप ग्रहों से हो, तो जातक के कर्म धूर्तता से प्रेरित होते हैं। इसके अतिरिक्त, जन्म कुण्डली में सूर्य या चन्द्र से सप्तम में यदि मंगल हो, तो जातक की प्रवृति धूर्ततापूर्ण कार्य की होती है।

ताजिक नीलकंठी के अनुसार दैवज्ञ को सर्वप्रथम यह विचार करना चाहिए कि प्रश्नकर्ता कुटिल ह्रदय वाला तो नहीं है। कपटी भावना द्वारा प्रेरित प्रश्न नहीं लगाना चाहिए।

लग्नस्थे शशिनि शनौ केन्द्रस्थे ज्ञे दिनेशरश्मिगते।

भौमज्ञयोरू समदृशा लग्नगचन्द्रेऽनृजुः प्रष्टा।।

अर्थात लग्न में चन्द्रमा, केन्द्र में शनि, बुध अस्त हो, मंगल–बुध परस्पर ताजिक समदृष्ट (परस्पर 2–12, 6–8) हों, तो प्रश्नकर्ता सरल ह्रदय नहीं होता, अर्थात कपटी होता है।

लग्ने शुभग्रहयुते सरलरू क्रूरान्विते भवेत्कुटिलः।

अर्थात लग्न में यदि शुभ ग्रह हों, तो जातक सरल ह्रदय वाला होता है, परन्तु यदि पापग्रह हों, तो जातक कुटिल ह्रदय वाला होता है।

यदि गुरुबुधयोरेकः पश्यत्यस्ताधिपं च रिपुदृष्ट्या।

तत्कुटिल : प्रष्टा खल्वनयोरेकस्तदा साधुः।।

अर्थात लग्न या सप्तम भाव पर गुरु या बुध की शत्रु दृष्टि (ताजिक) हो या दोनों में से किसी एक की सप्तमेश पर शत्रु दृष्टि हो, तो जातक कुटिल होता है, अन्यथा किसी की भी मित्र दृष्टि (ताजिक) हो, तो जातक साधु या सरल ह्रदय होता है।

प्रश्न कुण्डली की लग्न में यदि चन्द्रमा हो और वह बुध एवं मंगल द्वारा दृष्ट हो, तो भी जातक की प्रवृति कुटिल होने की संभावना अधिक होती है।

उदाहरण :

उदाहरण कुंडली 1
5–1–1979, 13:30, नयी दिल्ली

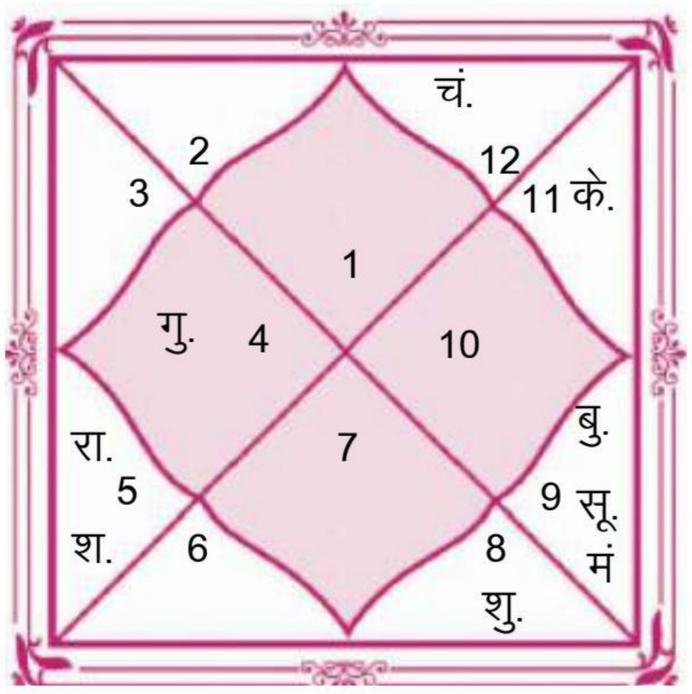

यह जातक कपडा व्यापारी था। बैंक तथा अन्य संस्थाओं से अत्यधिक ऋण लेकर विदेश में निवेश किया तथा वहाँ की नागरिकता ग्रहण करके विदेश में ही बस गया। देश में अनेक लोगों तथा कर्मचारियों का बकाया छोड़कर कम्पनी को दिवालिया घोषित करवा दिया।

उपरोक्त कुण्डली में मंगल–बुध की युति नवम भाव में है, पाप प्रभावित है तथा शुभ ग्रहों के प्रभाव से हीन है। यदि इस योग में बुध बली भी होता, तो जातक की कपटी प्रवृति और अधिक बलवान होती। पंचम भाव पर पीड़ित राहु एवं शनि का प्रभाव है, पंचमेश सूर्य भी पापी बुध एवं मंगल के प्रभाव में हैं और दोनों पर कोई शुभ प्रभाव नहीं है। शुक्र का अष्टम भाव में होना भी कपटी प्रवृति में वृद्धि करता है। ये

सब योग जातक के कपटी होने की ओर निर्देशित करते हैं।

उदहारण–2: जन्म समय प्रमाणिक नहीं है, अतः चन्द्र कुण्डली से आकलन करते हैं। इस जातक की कपटी प्रवृति तो जग जाहिर है।

उदाहरण कुंडली 2 : चंद्र कुंडली

चार्ल्स शोभराज
6–अप्रैल–1944, 12:00, वियतनाम

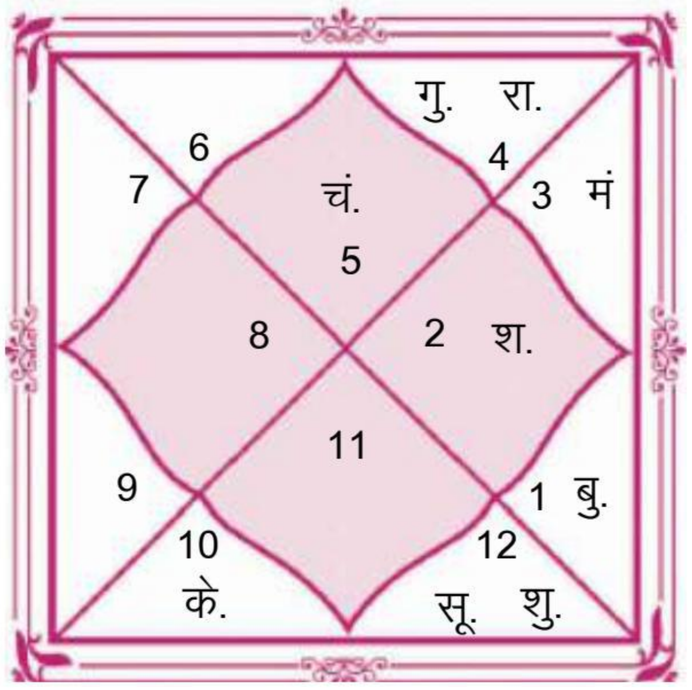

उपरोक्त कुण्डली में पंचम भाव पर मंगल का और पंचमेश पर राहु का प्रभाव है। मंगल–बुध का प्रगाढ़ सम्बन्ध राशि–परिवर्तन से बन रहा है। पापी बुध मेष राशि में हैं। शुक्र अष्टम भाव में है। लग्न में चन्द्रमा तथा केन्द्र में शनि भी हैं। ये सब योग जातक के कपटी होने की ओर निर्देशित करते हैं।

निष्कर्ष : निष्कर्ष के तौर पर यह कह सकते हैं कि आकलन करते समय किसी एक योग के आधार पर निर्णय नहीं करना चाहिए। कुण्डली में एक से अधिक योग उपस्थित होने चाहिए। योग पर अतिरिक्त अशुभ प्रभाव कपटी प्रवृति में अधिकता लाता है। योग से संबंधित ग्रहों की स्थिति भी देख लेनी चाहिए क्योंकि शत्रु, नीच, अस्त ग्रह कपटीपनको अधिक प्रभावित करते हैं।

मो. 9810162371

फेंगशुई सामग्री

बागुआ

लाफिंग बुद्धा

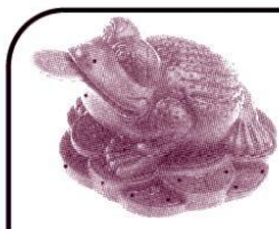
तीन टांगों का मेढ़क

बम्बु प्लान्ट

रत्नों का पेड़

चायनीज सिक्के

क्रिस्टल मछली

लुक फुक साउ

लव बर्डस

क्रिस्टल ग्लोब

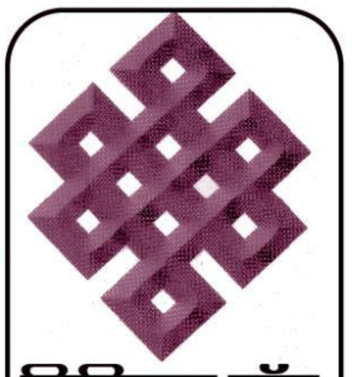
मिस्टिक नॉट

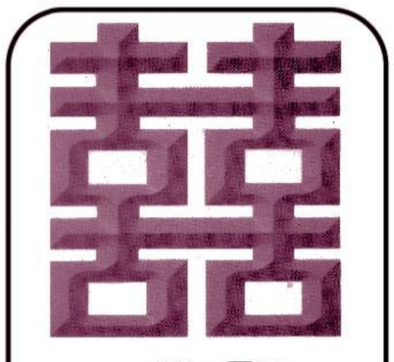
डबल हैपीनेस

विंड चाईम

एनिमल सेट

फ्यूचर पॉइंट

फ्लैगशिप कार्यालय : A-3, रिंग रोड, साउथ एक्स. पार्ट-1, नई दिल्ली-110049

शाखा कार्यालय : बी-237, सेक्टर 26, नोएडा - 201301

दूरभाष : 011–40541000

Web : www.futurepointindia.com | mail@futurepointindia.com |